3

कविता

एक तिनका

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

मैं घमंडों में भरा ऐंठा हुआ,
एक दिन जब था मुंडेरे पर खड़ा।
आ अचानक दूर से उड़ता हुआ,
एक तिनका आँख में मेरी पड़ा।

मैं झिझक उठा, हुआ बेचैन-सा,
लाल होकर आँख भी दुखने लगी।
मूँठ देने लोग कपड़े की लगे,
ऐंठ बेचारी दबे पाँवों भगी।

जब किसी ढब से निकल तिनका गया,
तब 'समझ' ने यों मुझे ताने दिए।
ऐंठता तू किसलिए इतना रहा,
एक तिनका है बहुत तेरे लिए।

» *ऐंठ को यहाँ 'बेचारी' क्यों कहा गया है?*

» *'एक तिनका है बहुत तेरे लिए' –यहाँ तिनका क्या-क्या हो सकते हैं?*

गतिविधियाँ

» **नमूने के अनुसार कविता की पंक्तियों को बदलकर लिखें।**

» **जैसे :**

• एक तिनका आँख में मेरी पड़ा।	»	मेरी आँख में एक तिनका पड़ा।

» **आशय समझें, सही वाक्य बनाएँ।**

• **घमंडी**	चुपके से भाग गई।
• **तिनका**	मुंडेर पर खड़ा था।
• **ऐंठ**	लाल होकर दुखने लगी।
• **आँख**	दूर से आकर आँख में पड़ गया।

» **कविता की विश्लेषणात्मक टिप्पणी लिखें।**

अनुबद्ध कार्य

- विश्लेषणात्मक टिप्पणियों का संकलन निकालें।

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

जन्म : 15 अप्रैल 1865
निधन : 16 मार्च 1947

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का जन्म उत्तर प्रदेश में हुआ था। उनकी कृति 'प्रिय प्रवास' को खड़ी बोली का पहला महाकाव्य कहा जाता है। काव्य के साथ ही उन्होंने गद्य विधा में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वैदेही वनवास, रुक्मिणी परिणय आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। वे 'प्रिय प्रवास' के लिए मंगला प्रसाद पारितोषिक से सम्मानित किए गए थे।

मदद लें :

घमंड	-	अहंभाव
ऐंठा हुआ	-	गर्व से भरा हुआ
मुंडेरा	-	Parapet
तिनका	-	सूखी घास का छोटा टुकड़ा
झिझक उठना	-	ഞെട്ടുക, Be startled, திகைத்தல், ಗಾಬರಿಯಾಗು
दुखना	-	दर्द होना
मूंठ देना	-	ചുരുട്ടുക, To roll, சுருட்டு தோல், ಸುತ್ತಿಕೊಳ್ಳು
दबे पाँव भागना	-	चुपके से भागना
किसी ढब से	-	किसी तरह से
समझ	-	विवेक
ताना देना	-	व्यंग्य करना